Maa Parvati Chalisa Lyrics Hindi

॥ दोहा ॥

जय गिरि तनये दक्षजे शंभु प्रिये गुणखानि ।
गणपति जननी पार्वती अम्बे ! शक्ति !
भवानि ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्मा भेद न तुम्हरो पावे ।
पंच बदन नित तुमको ध्यावे ॥१॥

षड्मुख कहि न सकत यश तेरो ।
सहसबदन श्रम करत घनेरो ॥२॥

तेऊ पार न पावत माता ।
स्थित रक्षा लय हित सजाता ॥३॥

अधर प्रवाल सदृश अरुणारे ।
अति कमनीय नयन कजरारे ॥४॥

ललित ललाट विलेपित केशर ।
कुंकुम अक्षत शोभा मनहर ॥५॥

कनक बसन कंचुकी सजाए ।
कटि मेखला दिव्य लहराए ॥६॥

कंठ मदार हार की शोभा ।
जाहि देखि सहजहि मन लोभा ॥७॥

बालारुण अनंत छबि धारी ।
आभूषण की शोभा प्यारी ॥८॥

नाना जड़ित सिंहासन ।
तापर राजति हरि चतुरानन ॥९॥

इंद्रादिक परिवार पूजित ।
जग मृग नाग रक्ष रव कूजित ॥१०॥

गिर कैलास निवासिनी जय जय ।
कोटिक प्रभा विकासिन जय जय ॥११॥

त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तिहारी ।
अणु अणु महं तुम्हारी उजियारी ॥१२॥

हैं महेश प्राणेश ! तुम्हारे ।
त्रिभुवन के जो नित रखवारे ॥१३॥

उनसो पति तुम प्राप्त कीन्ह जब ।
सुकृत पुरातन उदित भए तब ॥१४॥

बूढ़ा बैल सवारी जिनकी ।
महिमा का गावै कोउ तिनकी ॥१५॥

सदा श्मशान बिहारी शंकर ।
आभूषण है भुजंग भयंकर ॥१६॥

कण्ठ हलाहल को छबि छाई ।
नीलकंठ की पदवी पाई ॥१७॥

देव मगन के हित अस कीन्हों ।
विष लै आरपु तिनहि अमि दीन्हों ॥१८॥

ताकी तुम पत्नी छवि धारिणि ।
दूरित विदारिणि मंगल कारिणि ॥१९॥

देखि परम सौंदर्य तिहारो ।
त्रिभुवन चकित बनावन हारो ॥२०॥

भय भीता सो माता गंगा ।
लज्जा मय है सलिल तरंगा ॥२१॥

सौत समान शम्भु पहआयी ।
विष्णु पदाब्ज छोड़ि सो धायी ॥२२॥

तेहिकों कमल बदन मुरझायो ।
लखि सत्वर शिव शीश चढ़ायो ॥२३॥

नित्यानंद करी बरदायिनी ।
अभय भक्त कर नित अनपायिनी ॥२४॥

अखिल पाप त्रयताप निकन्दिनि ।
माहेश्वरी हिमालय नंदिनि ॥२५॥

काशी पुरी सदा मन भायी ।
सिद्ध पीठ तेहि आपु बनायी ॥२६॥

भगवती प्रतिदिन भिक्षा दात्री ।
कृपा प्रमोद सनेह विधात्री ॥२७॥

रिपुक्षय कारिणि जय जय अम्बे ।
वाचा सिद्ध करि अवलम्बे ॥२८॥

गौरी उमा शंकरी काली ।
अन्नपूर्णा जग प्रतिपाली ॥२९॥

सब जन की ईश्वरी भगवती ।
प्रतिप्राणा परमेश्वरी सती ॥३०॥

तुमने कठिन तपस्या कीनी ।
नारद सों जब शिक्षा लीनी ॥३१॥

अन्न न नीर न वायु अहारा ।
अस्थि मात्रतन भयो तुम्हारा ॥३२॥

पत्र गहस को खाद्य न भायउ ।
उमा नाम तब तुमने पायउ ॥३३॥

तप बिलोकि रिषि सात पधारे ।
लगे डिगावन डिगी न हारे ॥३४॥

तब तव जय जय जय उच्चारेउ ।
सप्तरिषी निज गेह सिधारेउ ॥३५॥

सुर विधि विष्णु पास तब आए ।
वर देने के वचन सुनाए ॥३६॥

मांगे उमा वर पति तुम तिनसों ।
चाहत जग त्रिभुवन निधि जिनसों ॥३७॥

एवमस्तु कहि ते दोऊ गए ।
सुफल मनोरथ तुमने लए ॥३८॥

करि विवाह शिव सों हे भामा ।
पुन: कहाई हर की बामा ॥३९॥

जो पढ़िहै जन यह चालीसा ।
धन जन सुख देइहै तेहि ईसा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

कूट चंद्रिका सुभग शिर जयति जयति सुख
खानि ।
पार्वती निज भक्त हित रहहु सदा वरदानि ॥

paramsoul.com

Maa Parvati Chalisa Lyrics Hindi

paramsoul.com